त्रिवेणीक रंग

त्रिवेणीक रंग

(विहनि/लघु कथा संग्रह)

राजदेव मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : ....

मूल्य : भा. रू. २००/-

पहिल संस्करण : २०१४

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड आॅफिस : ८/२१, भूतल,न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.
दूरभाष-(०११)२५८८९६५६-५८फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक : अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक : उमेश मण्डल

Distributor :
Pallavi Distributors Ward no 06 Nirmali (Supaul)
Pin code no- 847452
Mobile No- 9572450405, 9931654742, 8539043668

Triveneek Rang : Collection of Short Maithili Stories
by Rajdeo Mandal.

समरपन

कथाक सत्तरि

रूसल बौआ

दुर्गापूजाक मेला शुरू भऽ गेल छै। अष्टमी बीत गेलै, आबो नै हेतै मेला। मेलामे तँ होइते छै, खुशी, उत्साह, मनोरथ, मिलन। घर-घर बनि रहल छै मेवा-मिष्टान, तरुआ-भुजुआ आर कते चीज-बोस। रंग-बिरंगक नुआ-बस्तर पहिरने धिया-पुताक मुँहपर खुशी नाचि रहल अछि। सभ मेला देखबाक लेल तैयार भऽ रहल अछि। फेकन हड़बड़ाइत अँगना आएल आ पत्नीसँ पुछलक-

"बेचू बौआ कहाँ अछि? खेलक आकि भुखले अछि?"

पत्नीक मोनमे तामस औनाइते छलै। एकबेर तामससँ भरल आँखिए ताकलक आ बजल किछो नै। ओकरा दिश बिनु देखनहि फेकन फेर बजल-

"एकोटा रुपैया तँ घरमे छलै नै। सोचलौं- छौड़ा मेला देखैले जाए लगितै तँ मांगबे करतै। एक गोड़ेसँ हथपैंच लेलौं। आ बौआकेँ देखबे नै करै छी। कते गेल अछि?"

"जेतै कते, कानै छलै। दुआरिपर रुसल बैसल छै।"

"की भेलै से?"

"हेतै की, लवका पेण्ट-शर्ट लेतै।"

"ओह, अखनी तँ पैसाक बड्ड अभाव छै। ओकरा समझा-बुझा दैतिऐ से नै।"

"अहाँक धिया-पुताकेँ के समझाइत। कहै छलै जे अमितकेँ लवका पेण्ट-शर्ट ओकर बाबू आनि देलकै। ओ भोरेसँ देखा-देखा कऽ हमरा बुड़बक बनबैत अछि। औंठा देखा कऽ इहू-इहू कहैत अछि।"

"अहाँकेँ कहबाक चाही ने जे अमितक बाप धीरेन्द्र बाबू बड़का लोक छथि। पलिबारमे सरकारी नौकरीयो छै। जमीनो हमरासँ बहुत बेशी छै। हुनकर बराबड़ि हम केना करबै?"

"से गप्प हम कहलिऐ। रौ बौआ, अमित बड़का लोक छिऐ। उनटे तमसाकेँ बजल-

"अमितवा कद-काठीमे हमरासँ छोट अछि। परीक्षामे हमरासँ कम नम्बर लाबैत अछि। खेलो-कूदमे हमरासँ हारले रहैत अछि। ऊ हमरासँ नम्हर केना भेलै।– आब अहीं कहू जे केना बुझेबै? की कहबै?"

बझल कंठे फेकन बजल-

"आ हमहीं की करबै? एक साल रौदी तँ एक साल दाही। जी-जान लगा कऽ काज करै छी, तइयो उपजा ओतने होइत अछि। देह रोगाएल रहैत अछि। बाहरो कमेबाक लेल केना जाएब। हमरा सन छोट गिरहतकेँ देखनिहार कियो नै। अहाँ तँ देखबे करै छी। घरक खर्चा नै जुमैत अछि, तइयो धिया-पुताकेँ पढ़बै छी।"

पत्नीक सुरमे तामस भरल छल-

"हमर सऽख-सेहन्ता तँ डहि-जरि गेल। आब धीयो-पुतोक वएह गति भऽ रहल अछि। अहाँ कोनो करमक लोक नै छी। अहाँ बुत्ते नै किछो भेल आ नै हएत।"

अहाँ कोनो करमक लोक नै छी, ई वाक्य जेना फेकनक कलेजामे बरछी बनि गड़ि गेलै। तन-मनसँ समर्पित भावे काज केनिहारकेँ जँ फलक रूपमे दुत्कार भेटै तँ एकर प्रतिकार की? फेकनक मोन औना रहल छै। बेवश, लचार। ओकरा आँखिसँ भरभरा कऽ लोर खसि पड़लै। आसमे जेना आगि लागि गेल होइ। ओकर बेचू बेटा अढ़मे ठाढ़ भऽ कऽ सब किछो सुनै छलै। बापकेँ कानैत देखि नै रहल गेलै तँ लगमे जा कऽ बाजल-

> “बाबू अहाँ नै कानू। कोनो कि अंगे-पेण्टसँ लोक मेला देखै छै। ऊ लवका पेण्ट-शर्ट देखा कऽ हमरा बुड़बक बनबै छै। हम परीक्षामे ओकरासँ बेसी नम्बर लाबि कऽ ओकरा बुड़बक बनेबै।”

सपना सन....। क्षण भरिक लेल जेना नम्हर-छोट, ऊँच-नीच एके रंग बुझेलै। फेकन बेटाकेँ भरि पाँज पकड़ि लेलक। बाप-बेटा मिलैत देखि पत्नी मुस्की मारलक जे बाप-बेटा दुनूक लेल प्रश्न बनि ठाढ़ भऽ गेल।O४६३O

दोख केकर

इजोरिया रहै मुदा मेघक कारणे कनी अन्हार सन लगै छेलै। निशिभाग राति। सभ सूतल। किन्तु दिनेश दुनू परानीकेँ निन्ने ने होइ। जेना निन्ने रूसि रहल। नै रहल गेलै तँ पत्नीकेँ कहलकै-

"केतेकाल भूखल रहब? उठू खा लिअ।"

पत्नी चुप्पे करोट फेड़ि लेलक। पति बाँहि पकड़ि हिलबैत पुछलकै-

"की भेल? बजबै तब ने बुझबै।"

"बूझि कऽ की करबै? अहाँ बुते किछो ने हएत। अहाँ तँ उनटे...।"

"बुझबै तब ने। हमर दोख हेतै तँ हमरे दण्ड देब।"

"कोनो बुझने नै छिऐ। दोख अहाँ माएकेँ रहै आ गारि-बात हमरा देलौं। अहाँ हमरा बजा नै सकै छी।"

पति-

"तँ कहू जे रूसलासँ दिन-गुजर चलतै?"

तमसाइत पत्नी बाजलि-

"केतबो गल्ती अहाँक माए करै छै, तँ अहाँ एकोबेर बजै छिऐ आ हमरापर डाँग लऽ कऽ हुड़कै छी। कहै छी, हमरा बजाउ नै। हम अहिना भूखले मरि जाएब।"

समझाबैत पति बाजल-

"अच्छा एकटा खिस्सा सुनि लिअ। फेर नै बजब। सुनियौ। ई कथा चौबीस-पचीस बरख पहुलका छी। एकटा औरतक कथा। सुखक लीलशामे दुखक कथा। ओ बड्ड सुन्दर आ सुशील रहए। तँए शुरूमे पतिक आँखिमे ओकरा लेल परेम भरल रहै। मुदा एक-आधटा एहेन घटना घटले जे ओइ औरतकेँ ससुर आ पति दुनू दुख दिअ लगलै। ससुरकेँ मोनमाफित दहेजो नै भेटल रहै आर बहुतो कारणेँ तमसाएल रहै छेलै। ओइपर सँ ओहने समए आ अवसर सेहो भेट गेल रहै। एहेन समैमे केतबो डाँट-डपट करतै तँ उनटा कऽ जवाबो केना देत।

दू बेरसँ पँचमसु चिल्का नोकसान भऽ जाइ छेलै। पाँचम मास चढ़िते दरद करै आ गरभपात भऽ जाइ। तँए ओकरा पतिओकेँ हरिदम नाकेपर तामस रहै। जे सभ सोचने रहए ओ सभ पूरा नै होइत देखि मोन हरिदम बिधुआएले रहै छेलै। देखैत सपना टूटि गेलासँ कठ तँ हेबे करै छै।

...सासु नै रहै। औरतिया केकरा कहितै। आ के ओकर दुख बाँटितै। जेमहरे जाए तेमहरे डाँट-डपट आ ठोकर। कियो अपन नै, सभ आन। काज-उदेममे लगल समए कटबाक परियास करए आ असगरमे बैसि भरि मन कानि मनकेँ हल्लुक करए। समए बितैत रहै छै। बितैत रहल।"

अहूबेर ओरतिया तीन महिनासँ गरभवती रहए। कानसँ स्वर टकरा जाइ-

"फेर ओहिना हेतै। ऐबेर भगा बेटाकेँ चुमौन करा देबै।"

फेर दोसर काने पतिक स्वर सुनै-

"कोन-कोन डागदर-बैद आ ओझहा-गुणीसँ देखेलौं। कोनो फेदा नै। हेतै केतएसँ? पपियाही अछि ई।"

भातक दुख नै बातक दुख। जेना सान्हि मरै। कलेजामे भूर करै।

मोन आ शरीर दुनू संगी। एककेँ दुखित भेने दोसर केना ठीक रहि सकत।

औरत बिमार रहए लगल। माए-बापकेँ पता लगलै। समाद गेलै आ एलै। ओ नैहर आबि गेल। जेना बैशखा रौदमे गाछतर। नैहराक छाँह।

सभ गप्प सुनि-बूझि माए-बाप उपचारमे लगि गेलै। की-की नै केलक। केतए-केतए ने गेल।

अही क्रममे एकटा साधु बाबा उपदेश देलखिन-

"एकरा छह महिना वोनबास करबए पड़तौ।"

"औरत तँ अहुना बोनवासेमे रहैत अछि। फेर कोन वोनबास?"

"घर-अँगनासँ अलग। रातिओमे नै आबि सकैत अछि। अपने हाथसँ बनौल खाएत-पीअत। आर सभ गप्प बुझए पड़तौ।"

माए-बापकेँ मोन उड़ल रहै। सन्तानक सुखक लीलशा।

वोनबास शुरू भऽ गेल। घर-अँगनासँ अलग। आमक गाछीमे। बास करए लगल। टोलक लगेमे रहै मुदा गप्प तँ केकरोसँ नै कऽ सकैत अछि। इशारासँ काम चलाउ। आन लोक हटले रहै। दिन तँ कटि जाइ मुदा राति पहाड़।

कुशक ओछाइनपर गुदरी बिछौना। माटिएपर खाना आ माटिएपर सोना। मूजक डोरासँ डाँड़मे जखम भऽ गेलै।

जाड़ा-गरमी-बरखा। अन्हरिया राति। साँप-कीड़ा, बिलाय-कुत्ता नढ़िया-खिखिर। एकान्त बास। भरि दिन तँ जे किछु मुदा रातिमे माएकेँ नै रहल जाइ। बारहो बजे रातिमे आबि बनवासी बेटीकेँ भरि पाँज पकड़ि सुति रहए। निन्न टुटिते ओइठामसँ चलि आबए। जे फेर कोनो दोख ने भऽ जाए। आ आबैबला संतानपर कोनो विपति ने पड़ि जाए।

केहनो कठिन समए रहै छै। कटि तँ जेबे करै छै। लोको कोनो कम लगराह होइ छै।

वोनबासक समए बीतल।

गरभकाल पूरा भेलापर औरतियाकेँ बेटा जनमलै। फेरसँ ओकर सुखक दिन घुरि एलै। सभ दिससँ सिनेहक बरखा हुअ लगलै।"

किछुकाल चुप रहला पछाति दिनेश अपना पत्नीकेँ पुछलकै-

"आब कहू जे ओइ माएकेँ जँ बेटा गारि-बात देतै तँ ओकर की दशा हेतै?"

पत्नी गुम्मी साधने। किछो बजले ने जाइ। फेर दिनेशे बाजल-

"ओ औरत हमर माए छिऐ आ ओ बेटा हमहीं छिऐ।"

दुनू परानी चुप। रातिक चिड़ै केतौ-केतौ बजै छेलै। आर सभ किछु निशब्द भेल। दुनू परानीक बीचसँ शब्द हेरा गेल छेलै। किन्तु हाथ-पएरक क्रियासँ गप्प शुरू भऽ गेल छेलै। साँस-प्रश्वाँस गवाही दइ छेलै। मुस्कीकेँ अन्हार झँपने छेलै। आ दुनू परानीक बीच दोख बिला गेल छेलै।०६८९०

डरक नदी

सरिताकेँ निन्न नै होइ छेलै। आ निन्न पड़लै तँ सपनामे डूमि गेल। सपनामे देखैत अछि जे-

ऊँचगर जगहपर एकटा नमहर मूसक बिल अछि। चारूभर झौंकड़ा-झौकड़ी आ बिच्चेमे बिल। बिलसँ कनी हटि कऽ मूसक पूरा पलिवार घुरिया रहल अछि। सभ डेराएल, आपसी कनफूसकी करैत। ओइमे बेटा-पुतोहु, पोता-पोती, काका-भतीजा सभ गोटे। बाबाक प्रतीछा कऽ रहल अछि।

संकटकालमे बूढ़ बुजुर्गसँ सलाह-विचार केनाइ बड़ जरूरी होइ छै। ओहन बूढ़ जे अपन काज-वेपारसँ पलिवारमे धाक जमौने रहै छै। ओकरासँ काजक पहिने पूछि लेब आरो आवश्यक।

कनीओं खड़-पात खड़खड़ाइते मुसक धिया-पुता डेरा जाइत अछि। डेराएल तँ सभ अछि किन्तु किछु गोटे अपना डरकेँ झँपने अछि आ ऊ सभ रहि-रहि कऽ अपनासँ छोट डेराएल धिया-पुताकेँ रपटि दैत अछि।

"रौ, कनै छेँ किए। चुप रह। डेरा नै हम छियौ ने।"

"हौ काका जमराज आबि जेतै तँ तोरा सभ पहिने भागि जेबहक। तब की करबै? तूँ सभ तँ नांगरि ठाढ़ कऽ बड़ी रेशमे भगै छहक, हमरा सभकेँ तँ एके झपटमे पकड़ि लेतै।"

"धू बुड़बक, बड़ डेरबुक छेँ, एनए एतै तब ने रौ।"

बुढ़बा मूस जखैत-तपैत आबि रहल अछि। ओकरा देखिते मूसक धिया-पुता सभ चारूभरसँ घेरि लेलक-

"हौ बाबा, जुलुम भऽ गेलै हौ, आब केतए रहबहक?"

"की भेलै रौ?"

"हौ, अपना बिलक मुँहपर बड़का साँप बैसल छै। चलह दोसरे ठाम रहबै। ऐठिनासँ भागह जल्दी।"

"रौ केतए जेबही। मनकेँ थिर कर बौआ। संसारक कोनो कोणमे नुकेबही डर ओतौ पाछूसँ पहुँच जेतौ। केतौ खतरासँ खाली जगह नै छै। रौ नूनू, जीबैले संघर्ष करए पड़तौ।"

बूढ़ मूसक जेठका पोता फनकि कऽ बाजल-

"हे यौ बाबा, गप तँ खौब हँकै छी। तँ जा कऽ देखियौ। एकबेर संघर्ष करियौ।"

मूसक दोसर पोता बाजल-

"ठीके यौ बाबा, अहाँ तँ खिस्सा सुनबै छेलिऐ जे जुआनीमे जमराजकेँ पछाड़ि देने रहिऐ, एकबेर वएह चितरसेना दाउ-पेंच लगाउ बुढ़ाड़ीमे।"

बुढ़बा मूस मने-मन सोचलक, छौड़ा सभ गरपर चढ़ा देलक। बँचबाक उपए ताकए पड़त। बुझबैत बाजल-

"हे रौ ई सभ जवान-जुआनक काज छिऐ। जवान जँ लड़तै तँ किछ देर लड़ाइमे ठठबो करतै। हमरा सबहक उमेर आब संघरषक जोग छै? ठीकसँ सुझबो ने करैए। की कहबो-सभटा दुख चढ़ल बुढ़ाड़ी, नैन बिनु पंथ भारी।"

बुढ़बा मूसक जेठका पोताकेँ नै रहल गेल तँ फेर बाजल-

"हे, माए-बाबू, काकी-काका सबहक विचार इहए भेल छै जे बिल लग सभसँ पहिने तोरे जाए पड़तह। सभ कहै छेलै जे बुढ़बा आब बेसी जीिव कऽ की करतै। पलिवारोपर तँ भारे बनल छै।"

बुढ़बा चौंक कऽ बाजल-

"अँए, तँ आब हम भार बनि गेलियौ रौ। तेकर मतलब हमर कएल-धएल पानिमे चलि गेलै। आरौ तोरीकेँ ठीके कहै छै...।"

बूढ़ मूसक जेठकी पुतोहु मुँह दाबि कऽ बजली-

"एकटा गप पुछै छी बाबू। अपना सोझहामे बेटा-पोताकेँ मरैत देखबै से नीक लागत? एकरा सभकेँ तँ देश-दुनियाँ देखबाक आ भोगबाक समए छै- अखनी।"

मूसक जेठका बेटा मुँह फेड़ दोसर दिस तकैत बाजल-

"हम तँ तखैने जाइ छेलिऐ। देखबै एक धक्का। ऐपार आकि ओइपार। की करबै। सभ गोटे टाँग छानि कऽ कानए लगलै आ कहलकै- सौंसे पलिवारक भार अहीं उठौने छिऐ। अहाँकेँ किछो भऽ जाएत तँ पलिवारक देख-भाल केना हेतै।"

पोता चट दऽ टपकि उठल-

"काका, कहै छेलै जे बुढ़बा तँ भरिदिन बिछौना धेने रहै छै। ओकरा रहने की आ नै रहने की। आबए दही, काल लग पहिने वएह जेतै।"

गप सुनि बुढ़बाकेँ सभसँ मन टूटि गेलै। जेना चारू पाजासँ हारल लोक। केकरोसँ कोनो मोह ममता नै। बुझेलै आब ऐ दुनियाँसँ चलि जाइ, सएह नीक। तैयो प्राणक मोह सभसँ बड़का मोह।

दुनियाँसँ केतबो विराग भऽ जाए। सभसँ नाताक डोरि टूटि जाए। तैयो साक्षात कालक मुँहमे जाइ बखत डर समेनाइ सोभाविके छै।

बुढ़बा मूस जोशमे किछु कदम तँ खौब लफड़ि कऽ चलल तेकर बाद टाँग नै उठै। खुच-खुच लगही लगै। जखनि बिलक निकट चलि गेलै आ साँपक आकृति देखाइ पड़ए लगलै, तखनि मल-मूत्रपर सँ नियंत्रन हटि गेलै।

दड़बड़ मारि बिलक लगमे जे झौंकड़ा रहै तइमे ढूकि गेलै। किछु देर तक कोनो तरहक आक्रमण नै भेलै, तब झाँकुरसँ नांगरि िनकालि साँपक आँखि दिस डोलोलकै। तैयो कोनो प्रतक्रिया नै भेलै। बुढ़बाकेँ भारी अचरज भेलै, ओकर पकल दिमाग दौगए लगलै।

"कहीं मुइल साँप तँ ने छै?"

मनमे प्रश्न उठलै डर किछु छँटि गेलै। देव-पितरकेँ सुमरैत देह-हाथ सम्हारि बाहर निकलल। पूरा सतर्क भेल। टक-टक तकैत साँप दिस बढ़ल। भागैले तैयारो अछि। घुसकैत-घुसकैत लग जा कऽ देखलक, ठीकसँ देखिते ठिठिया कऽ हँसल आ हँसैत बाजल-

"रौ तोरी! साँप कहाँ छै ई तँ साँप खोल छिऐ। केचुआ।"

जोरसँ सोर पाड़लक-

"रौ आबै जो, आब डेराइक कोनो गप नै।"

धिया-पुता दौग कऽ लग आएल आ पुछलक-

"बाबा, जीअत छै की मुइल हौ?"

बुझबैत बुढ़बा बाजल-

"हे रौ, ई तँ खोल छिऐ ओकर। ऊ तँ ऐ मे सँ निकलि गेल छै।"

"निकलि कऽ केतए गेलै हौ?"

"हेतौ तँ अही आसे-पासेमे। जँ मुइलाक बादो जीव खोल छोड़ैले तैयार नै रहै छै, तँ जीअत की करतै...।"

फेर डर सबहक मनमे नाचए लगलै।
मूसक जेठका पोता बाजल-

"अच्छा, हटि जा बिलक मुँहपर सँ। एेते बात किए बनबै छहक।"

बुढ़बा कऽ जल्दीसँ नै हटल भेलै। सभटा मूस एकेबेर बिल दिस रेड़ देलक। बुढ़बाक देह-कपारपर चढ़ैत। ठेलैत-धकियबैत। बुढ़बा केंकिआइत ओंघरा कऽ खसल। मूसक जेठका बेटा अपना पत्नीक मुँहपर दाँत गड़ा देलक। दुनू एकेबेर खेंखियाइत बिलमे ढुकि गेल।

सरिताकेँ सपनामे बुझेलै जे कियो ओकरो गालपर किछु गड़ा देलक आ जेना मूस सभ देहपर दौगए लगल।

ओकर देह चमकि उठलै। सौंसे देह सिहरि कऽ काँटो-काँट भऽ गेलै। सपना भंग भऽ गेलै। बुझेलै देहपर एगो हाथ चलि रहल अछि। अन्हारमे टेबलक। ई हाथ ओकर पतिक छेलै। फेर मन पड़लै, अपना धिया-पुताक फौज। जे निरंतर बढ़ले जा रहल छेलै। अनन्त आवश्यकताक संग। किछु चलैत-चलैत जेना ठाढ़ भऽ गेलै।

मनमे जे डरक नदी बहै छेलै ओइमे अकस्मात बाढ़ि आबि गेलै।O९०५O